Websites:
http://www.sciencepub.net/academia
http://www.sciencepub.net

Emails:
aarena@gmail.com
editor@sciencepub.net

Academia Arena

MARSLAND PRESS
Multidisciplinary Academic Journal Publisher

Impact of Hindi literature on freedom movement

Dr. Poonam Dhochak

Assistant Professor, Bhagwan Parshuram College of Education, Nara, Panipat. 132103,
Haryana (India)
Email: poonamdhochak02@gmail.com

Abstract: Hindi played an important role in the freedom movement of India. Mahatma Gandhi was a Gujarati, C. Rajagopalachari was a Madrasi, great philosophers and revolutionaries like Raja Ram Mohan Roy, Ishwar Chandra Vidyasagar and Devi Prasad Chattopadhyay were Bengali, similarly revolutionaries from different provinces of the country engulfed themselves in the freedom movement. He chose Hindi to take the message of independence to the people across the country. Intellectuals working towards nation building are of the opinion that all regional dialects should be mutually respected. Everyone should be unanimous that Hindi is the elder sister of all regional languages. The country can be made more powerful by giving more power to Hindi. Scholars working for Hindi have shared their views.
[Dhochak, P. **Impact of Hindi literature on freedom movement**. *Academ Arena* 2022;14(5):7-12]. ISSN 1553-992X (print); ISSN 2158-771X (online). http://www.sciencepub.net/academia. 2. doi:10.7537/marsaaj140522.02.

Keywords: Impact; Hindi; literature; freedom; movement

हिंदी साहित्य का स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव

सारांश : भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का बड़ा महत्व रहा। महात्मा गांधी गुजराती थे, सी. राजगोपालाचारी मद्रासी थे, राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर व देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय जैसे महान दार्शनिक व क्रांतिकारी बंगाली थे, ऐसे ही देश के अलग-अलग प्रांतों के क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में खुद को खपा दिया। उन्होंने स्वाधीनता का संदेश देशभर में जन-जन तक पहुंचाने के लिए हिंदी को चुना। राष्ट्र निर्माण की दिशा में काम करने वाले बुद्धिजीवियों की राय है कि सभी क्षेत्रीय बोलियों का परस्पर सम्मान होना चाहिए। सबकी एकराय होनी चाहिए कि हिंदी सभी क्षेत्रीय भाषाओं की बड़ी बहन है। हिंदी को अधिक ताकत देकर देश को अधिक ताकतवर बनाया जा सकता है। हिंदी के लिए काम करने वाले विद्वानों ने अपने विचार साझा किए हैं।

शब्द संकेत : **स्वतंत्रता आंदोलन, हिंदी, साहित्य**

परिचय: यह सभी जानते हैं कि 15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। यह हमारे राष्ट्रीय जीवन में हर्ष और उल्लास का दिन तो है ही, इसके साथ ही स्वतंत्रता की खातिर अपने प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों का पुण्य दिवस भी है। देश की स्वतंत्रता के लिए 1857 से लेकर 1947 तक क्रांतिकारियों व आंदोलनकारियों के साथ ही लेखकों, कवियों और पत्रकारों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनकी गौरव गाथा हमें प्रेरणा देती है कि हम स्वतंत्रता के मूल्य को बनाए रखने के लिए कृत संकल्पित रहें। प्रेमचंद की रंगभूमि, कर्मभूमि) उपन्यास(, भारतेंदु हरिश्चंद्र का भारत-दर्शन) नाटक(, जयशंकर प्रसाद का चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त) नाटक (आज भी उठाकर पढ़िए, देशप्रेम की भावना जगाने के लिए बड़े कारगर सिद्ध होंगे। वीर सावरकर की '1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम' हो या पंडित नेहरू की 'भारत एक खोज' या फिर लोकमान्य बाल

गंगाधर तिलक की 'गीता रहस्य' या शरद बाबू का उपन्यास 'पथ के दावेदार' -जिसने भी इन्हें पढ़ा, उसे घर-परिवार की चिंता छोड़ देश की खातिर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए स्वतंत्रता के महासमर में कूदते देर नहीं लगी। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आह्वान किया:

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।

देश पर मर मिटने वाले वीर शहीदों के कटे सिरों के बीच अपना सिर मिलाने की तीव्र चाहत लिए सोहन लाल द्विवेदी ने कहा:

हो जहां बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।

वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता को कौन भूल सकता है, जिसने अंग्रेजों की चूलें हिला कर रख दी। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है:

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहिचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

'पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं' का मर्म स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे वीर सैनिक ही नहीं वफादार प्राणी भी जान गए, तभी तो पं .श्याम नारायण पांडेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए 'हल्दी घाटी' में लिखा:

रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था,
राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था,
गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था,
वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश', निराला ने भारती !जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे', कामता प्रसाद गुप्त ने 'प्राण क्या हैं देश के लिए, देश खोकर जो जिए तो क्या जिए', इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा', तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में कहा:

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए
नाश ! नाश !हां महानाश ! ! !की
प्रलयंकारी आंख खुल जाए।

इन कवियों ने यह वीर रस वाली कविताएं सृजित कर रणबांकुरों में नई चेतना का संचार किया। इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही)त्रिशूल(, माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ ही बंकिम चंद्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत 'वंदे मातरम' गीत आजादी के परवानों को प्रेरित करता है। 'वंदे मातरम' आज हमारा राष्ट्रीय गीत है, जिसकी श्रद्धा, भक्ति व स्वाभिमान की प्रेरणा से लाखों युवक हंसते-हंसते देश की खातिर फांसी के फंदे पर झूल गए। वहीं हमारे राष्ट्रगान 'जन गण मन अधिनायक' के रचयिता रवींद्र नाथ ठाकुर का योगदान अद्वितीय व अविस्मरणीय है। स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर बाबू गुलाबराय का कथन समीचीन है – '15 अगस्त का शुभ दिन भारत के राजनीतिक इतिहास में सबसे अधिक महत्त्व का है। आज ही हमारी सघन कलुष-कालिमामयी दासता की लौह शृंखला टूटी थी। आज ही स्वतंत्रता के नवोज्ज्वल प्रभात के दर्शन हुए थे। आज ही दिल्ली के लाल किले पर पहली बार यूनियन जैक के स्थान पर सत्य और अहिंसा का प्रतीक तिरंगा झंडा स्वतंत्रता की हवा के झोंकों से लहराया था। आज ही हमारे नेताओं के चिरसंचित स्वप्न चरितार्थ हुए थे। आज ही युगों के पश्चात् शंख-ध्वनि के साथ जयघोष और पूर्ण स्ततंत्रता का उद्घोष हुआ था।' 'ऐ मेरे वतन के लोगो ज़रा आंख में भर लो पानी' गीत को याद करते हुए सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी साहित्य

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850-85) के बारे में जानकारी प्राप्त करें जो हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग के प्रमुख प्रवर्तक रहे हैं । अपनी असामयिक मृत्यु के बावजूद भारतेन्दु ने काफी मात्रा में साहित्य का सृजन किया और विभिन्न

साहित्यिक विधाओं जैसे कविता, नाटक और निबंध आदि विधाओं में लिखा। अपने देश और समाज की स्थिति से लोगों को अवगत कराने के लिए उन्होंने कई पत्रिकाएं निकाली। भारतेन्दु द्वारा रचित साहित्य का एक बड़ा भाग पराधीनता के प्रश्न से संबंधित है। उदाहरण के लिए 1877 में हिन्दी के प्रसार से संबंधित अपने एक भाषण में उन्होंने जन साधारण से निम्न मार्मिक प्रश्न किए : "यह कैसे सम्भव हो सका कि इन्सान होते हुए भी हम तो दास बन गए और वे (अंग्रेज़) राजा ?"

यह एक ऐसा प्रश्न था जिसने भारत की राजनीतिक स्थिति के मर्म को छू लिया और यह न इतने सरल और मार्मिक ढंग से उठाया गया था कि सामान्य स्त्री-पुरुष भी इमे परी तरह समझ सकें। किन्त साथ ही यह ऐसा प्रश्न था जिसने जनता में अपने सर्वशक्तिमान राजाओं के समक्ष नपंसकता का भाव जगाया। इस भावना को दूर करने के लिए भारतेन्द ने दूसरा प्रश्न पछकर उन्हें प्रेरणा दी। उन्होंने पूछा, "दास की भांति कव तक तम इन दखों को झेलते रहोगे किव लौ दग्न महि हौ मवै रहि हो बने गलाम) अपने इसी भाषण मे उन्होंने लोगों को देश की मुक्ति के लिए विदा घों पर। निर्भर रहने की अशक्तकारी प्रवृत्ति के विरुद्ध चेतावनी दी।

उन्होंने लोगो को प्रेरणा दी कि आपमा मतभेद और भय दूर करके अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति और देश की गरिमा की रक्षा करे। यहा यह वताना आवश्यक है कि यह भाषण ऐमी मोधी सरल कविता के रूप में दिया गया लो अपने श्रोताओं और पाठकों के हृदय को छ सके।

इस प्रकार भारतेन्द ने देशभक्ति का मंदेश लोगो तक पहचान लिए कविता। उन्होंने इसके लिए प्रचलित पद्य तथा "हत्यिक विधामो का भी उपयोग किया। उन्होंने ऐसे भजन भी लिखे जिनका उद्देश्य देश की कि चित्रण करना। अपने संदेश को ज्यादा बड़े क्षेत्र में फैला सकं। उन्होंने अपने समकालीन माहित्यकारो को लोक साहित्य की विधाओं के इस्तेमाल को भी मलाह दी। विकाम की यह मो प्रक्रिया धी जिसकी चरम परिणति उम समय हई जव स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोगे पर था ! ऐसे लोकप्रिय गीत लिखे जाते थे और प्रभात फेरियो एवं जन-सभाओं में गाये जाते थे। भारत में अंग्रेज़ा सरकार इनमें से कई गीतों पर प्रतिबंध लगाने के लिए वाध्य हुई लेकिन उन्हें इसमें अधिक सफलता नहीं मिली।

इस प्रकार की रचनाओं का एक लाभ यह भी हुआ कि विदेशी शासन की असलियत को ऐसी भाषा में पेश किया गया जिसे लाखों अशिक्षित भारतीय भी तुरंत समझ सकें और उससे प्रेरणा प्राप्त कर सकें। भारत में अग्रेज़ों की मौजूदगी का अर्थ जानने के लिए अर्थ-व्यवस्था की बारीकियों और साम्राज्यवाद के सिद्धांतों को समझना आवश्यक नहीं था। इसे कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है। हम जानते हैं कि अग्रेज़ी शासन की राष्ट्रवादियों, द्वारा की गयी आलोचना की एक महत्वपूर्ण मद थी-भारतीय **"धन की लूट"**। यह ऐसा मुद्दा था जिस पर भयंकर विवाद हुआ।

और यह विवाद अक्सर ऐसी भाषा में किया जाता था और इस प्रकार के तथ्य और आंकड़े दिये जाते थे जिनका समझना आसान नहीं था। फिर भी थोड़े ही समय में "लूट" ऐसा तथ्य बन गया जिसे समझने में लोगों को अधिक कठिनाई नहीं होती थी। **"लूट"** शब्द को जनता तक पहुँचाने में साहित्य ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। हिन्दी के प्रसार पर अपने भाषण में भारतेन्दु ने **"लूट"** को विदेशी शासन की मूल बुराई और विदेशी शासन के अस्तित्व का मूल कारण बताया। रोज़मर्रा की भाषा में उन्होंने इस बात को इस प्रकार व्यक्त किया :

कल के कल बल छलन सों छले इते के लोग,
नित नित धन सों घटत है बढ़त है दुःख सोग।
मारकीन मलमल बिना चलत कछू नहिं काम
परदेसी जुलहान के मानहु भये गुलाम ।।

भारतेन्दु ने, मान्चेस्टर में शक्तिशाली औद्योगिक हितों को व्यक्त करने के लिए एक सामान्य शब्द "परदेसी जुलाहे" का इस्तेमाल किया। और यह बताया कि पराधीन भारत के सामान्य स्त्री-पुरुष के जीवन पर साम्राज्यवाद की शक्तियों का कितना गहरा प्रभाव पड़ रहा है। ब्रिटेन और भारत के बीच शोषक और शोषित के संबंध को उन्होंने दो जाने-पहचाने प्रतीकों "मान्चेस्टर" और "लूट" के द्वारा स्पष्ट किया। इस प्रकार वे इस संबंध की कठोर यथार्थता को "मुकरी" में व्यक्त कर सके। मुकरी एक परंपरागत काव्य विद्या है जिसमें चार पंक्तियां होती हैं। भारतेन्दु ने जिसे बड़े मार्मिक ढंग से "आधुनिक युग के लिए मुकरी" के

रूप में वर्णित किया है, उसमें उन्होंने "लूट' की निम्नलिखित व्याख्या दी है :

भीतर भीतर सब रस चूसै ।
हंसि हंसि के तन-मन-धन मूसै ।
जाहिर बातन में अति तेज ।
क्यों सखि साजन नहिं अँगरेज ।

लोक विधाओं का चयन केवल कविता तक ही. सीमित नहीं था । भारतेन्दु ने अपने कुछ नाटकों में भी अपने समय की प्रचलित विधाओं एवं कथाओं का उपयोग किया । उदाहरणस्वरूप **"अंधेर नगरी चौपट राजा"** में उन्होंने अंग्रेज़ी शासन के निरंकुश और उत्पीड़नकारी चरित्र का चित्रण करने के लिए एक ऐसी लोक कथा का उपयोग किया जो देश के विभिन्न भागों में सामान्य रूप से प्रचलित थी । इस कथा में राजनीतिक संदेश तो स्पष्ट रूप में मिलता ही है, पाठक का मनोरंजन भी होता है । राजनीतिक उद्देश्यों के लिए हास्य-व्यंग्य का कारगर प्रयोग भारतेन्दु की रचनाओं में मिलता है । अपनी गंभीर कृतियों में भी भारतेन्दु ने पाठकों का भरपूर मनोरंजन किया है । **'भारत दर्दशा' (1880)** में जो कि उनका एक सीधा सच्चा राजनीतिक नाटक है, भारतेन्दु ने कई हास्यप्रद दृश्यों और संवादों को शामिल किया है ।

हिन्दी के प्रसार पर दिये गये अपने भाषण में देश की पराधीनता के विषय में भारतेन्दु ने जो कुछ भी कहा वह उनकी कृतियों में बार-बार उभर कर सामने आता है । किन्तु इसके साथ-साथ ही अक्सर वे अंग्रेज़ी शासन की मुक्तकंठ से प्रशंसा भी करते जाते हैं । इस प्रकार सशक्त देशभक्ति-पूर्ण स्वर के बावजूद **'भारत दुर्दशा'** में भारतेन्दु यह भी कहते हैं कि अंग्रेज़ी शासन की स्थापना से देश को नवजीवन मिला है । इसी प्रकार अपने एक अन्य नाटक **"भारत जननी" (1877)** में भारतेन्दु स्वीकार करते हैं कि यदि अंग्रेज़ भारत पर शासन करने न आते तो देश का निरन्तर विनाश होता रहता ।

यहां यह ध्यान देने योग्य बात है कि अंग्रेजों के प्रति यह दोहरा रवैया केवल चिपूलणकर अथवा भारतेन्दु का ही नहीं था । ये केवल ऐसे उदाहरण मात्र हैं जो बताते हैं कि आमतौर पर पश्चिम और विशेषकर अंग्रेज़ी शासन के प्रति आम शिक्षित भारतीय की प्रतिक्रिया क्या थी । समय गुज़रने के माथ-साथ पराधीनता और इसके विनाशकारी परिणाम उनके समक्ष स्पष्ट हो चुके थे और भारत में अंग्रेजों की उपस्थिति को वरदान मानने की प्रवृत्ति तेज़ी से घटने लगी थी । तथापि यह प्रवृत्ति भारतीयों में पूरी तरह. समाप्त न हो सकी । जैसाकि हमने पिछले पृष्ठों में देखा, यह रवैया आज, हमारे दौर में भी मौजूद है ।

स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी का महत्व

प्रेमचंद की 'रंगभूमि, कर्मभूमि' उपन्यास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का 'भारत -दर्शन' नाटक, जयशंकर प्रसाद का 'चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त' नाटक आज भी उठाकर पढ़िए देशप्रेम की भावना जगाने के लिए बड़े कारगर सिद्ध होंगे। वीर सावरकर की "1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम" हो या पंडित नेहरू की 'भारत एक खोज' या फिर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 'गीता रहस्य' या शरद बाबू का उपन्यास 'पथ के दावेदार' जिसने भी इन्हें पढ़ा, उसे घर-परिवार की चिन्ता छोड़ देश की खातिर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए स्वतंत्रता के महासमर में कूदते देर नहीं लगी।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्ता ने "भारत-भारती" में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आव्हान किया-

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।"

देश पर मर मिटने वाले वीर शहीदों के कटे सिरों के बीच अपना सिर मिलाने की तीव्र चाहत लिए सोहन लाल द्विवेदी ने कहा-

"हो जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।"

वहीं आगे उन्होंने "पुष्प की अभिलाषा" में देश पर मर मिटने वाले सैनिकों के मार्ग में बिछ जाने की अदम्य इच्छा व्यक्त की-

"मुझे तोड़ लेना बनमाली! उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक।।"

सुभद्रा कुमारी चौहान की "झांसी की रानी" कविता को कौन भूल सकता है, जिसने अंग्रेजों की चूलें हिला कर रख दी। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है-

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,

गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहिचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तनवार पुरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी की रानी थी।"

"पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं" का मर्म स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे वीर सैनिक ही नहीं वफादार प्राणी भी जान गये तभी तो पं. श्याम नारायण पाण्डेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए "हल्दी घाटी" में लिखा-

"रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था,
राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था,
गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था,
वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।"

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसार ने "अरुण यह मधुमय देश हमारा" सुमित्रानंदर पंत ने "ज्योति भूमि, जय भारत देश।" निराला ने "भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे।।" कामता प्रसाद गुप्त ने "प्राण क्या हैं देश के लिए के लिए। देश खोकर जो जिए तो क्या जिए।।" इकबाल ने "सारे जहाँ से अच्छा हिस्तोस्ताँ हमारा" तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर को जाये
नाश ! नाश! हाँ महानाश! ! ! की
प्रलयंकारी आंख खुल जाये।"

कहकर रणबांकुरों में नई चेतना का संचार किया। इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर' राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ ही बंकिम चन्द्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत "वन्दे मातरम्" गीत-

वन्दे मातरम्!
सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्य श्यामलां मातरम्! वन्दे मातरम्!
शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरत्। वन्दे मातरम्! "

...........................जो आज हमारा राष्ट्रीय गीत है, जिसकी श्रद्धा, भक्ति व स्वाभिमान की प्रेरणा से लाखों युवक हंसते-हंसते देश की खातिर फांसी के फंदे पर झूल गये। वहीं हमारे राष्ट्रगान "जनगण मन अधिनायक" के रचयिता रवीन्द्र नाथ ठाकुर का योगदान अद्वितीय व अविस्मरणीय है।

स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर बाबू गुलाबराय का कथन समीचीन है – "15 अगस्त का शुभ दिन भारत के राजनीतिक इतिहास में सबसे अधिक महत्व है। आज ही हमारी सघन कलुष-कालिमामयी दासता की लौह श्रृंखला टूटी थीं। आज ही स्वतंत्रता के नवोज्ज्वल प्रभात के दर्शन हुए थे। आज ही दिल्ली के लाल किले पर पहली बार यूनियन जैक के स्थान पर सत्य और अहिंसा का प्रतीक तिरंगा झंडा स्वतंत्रता की हवा के झौंकों से लहराया था। आज ही हमारी नेताओं के चिरसंचित स्वप्न चरितार्थ हुए थे। आज ही युगों के पश्चात् शंख-ध्वनि के साथ जयघोष और पूर्ण स्ततंत्रता का उद्घोष हुआ था।"

ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आंख में भर लो पानी गीत को याद करते हुए सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

जय हिन्द! जय भारत!

सन्दर्भ :-

1. भगवान दास माहौर, 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव, कृष्णा ब्रदर्स पब्लिकेशन हाउस, अजमेर : 1976

2. धर्मपाल सरीन, हिन्दी साहित्य और स्वाधीनता-संघर्ष : भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर पड़े प्रभाव का दिग्दर्शन, नई दिल्ली : आर्य बुक डिपो, 1973

3. बदरीनारायण श्रीवास्तव, रामानन्द-सम्प्रदाय तथा हिन्दी-साहित्य पर उसका प्रभाव : एक गवेषणात्मक

अध्ययन, प्रयाग : हिन्दी परिशद् प्रयाग विश्वविद्यालय, 1957

4. **लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिन्दी साहित्य का इतिहास,** इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1987

4/25/2022